DR. MERAJ

Nature and Significance of Political theory

राजनीतिक | सिद्धान्त

Political — Theory

The term refers to something related to polity, that is public

✓ Greek words "Polis" which means Greek city-State

Theory stand for a systematic Knowledge.
व्यवस्थित व क्रमबद्ध अध्ययन

✓ Greek word *Theoria*

Broadly speaking, Political is concerned with the three types of statements —

(1) Empirical Statement

(2) Logical Statement

(3) Evaluative Statement

Scanned by TapScanner

राजनीति सिद्धांत के विषय क्षेत्र

Scope of Political Theory

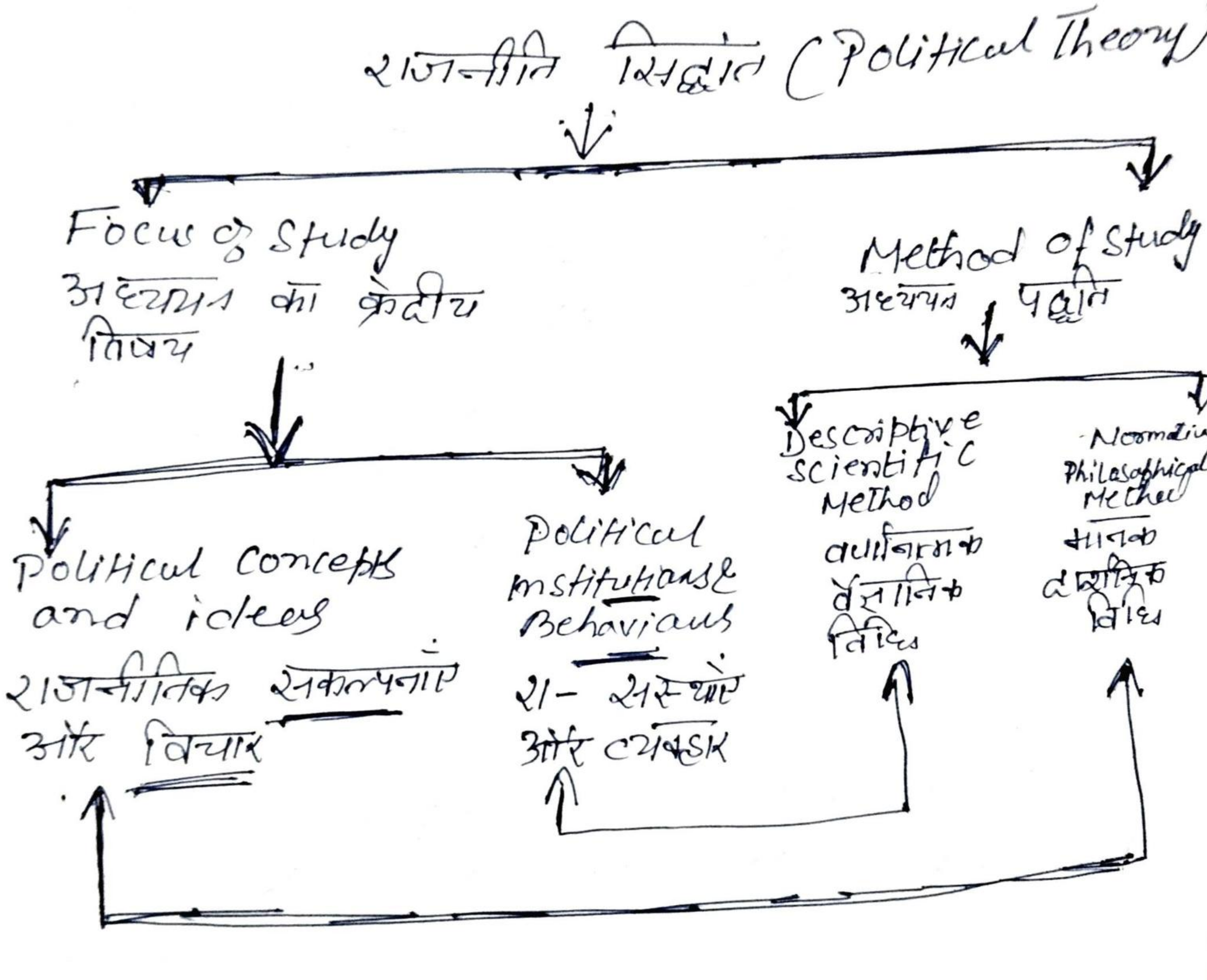

(1) सिद्धांत (2) उपागम (3) विधि

(1) सिद्धांत : निश्चित व क्रमबद्ध अध्ययन

(2) उपागम (Approach) : अध्ययन कि पद्धति या अध्ययन का विषय

(3) विधि : खोज का तरिका

(1) किसी राजनीतिक ~~व्यवस्था~~ मान्यता का व्यवस्थित व क्रमबद्ध अध्ययन, व्यवस्थागत नियमों का एक संगठित समवेश होता है

कोहन : एक खाली चेक है, जिनकी उपयोगिता उपयोगीकता पर निर्भर

(3)

(Theory - Definition by Thinkers

राजनीति सिद्धांत

राजनीति सिद्धांत या राजनीति शास्त्र का अर्थ समझने के लिए हमें इसके समानार्थी शब्दो व राजनीति व राजनीति विज्ञान का अंतर समझना पड़ेगा।

राजनीति सिद्धांत

नगर या राज्य politicus	Theory
छोटा राज्य political, polity	Thearia
city State Greek	Deep knowledge

राजनीति सिद्धांत की परिभाषा:-

पोलिटिकल थ्योरी अर्थात राजनीतिक सिद्धांत या राजनीति शास्त्र राजनीति घटना क्रम के सुव्यवस्थित राजनीति अध्ययन को कहते है। राजनीति विज्ञान का मुख्य अध्ययन विषय राज्य, शासन विधि निर्माण के सिद्धांत रहे है।

अरस्तु :- (i) अरस्तु ने मनुष्य को राजनीतिक प्राणी माना है।
(ii) अरस्तु ने राजनीति के अध्ययन को सर्वोच्च विज्ञान या परम विद्या की संज्ञा दी है।

क्रापाटकिन :- इनकी किताब म्यूचल एड मे कहा है यह परस्पर सहायता का सिद्धांत है।

गार्नर :- राजनीति विज्ञान का आरम्भ और अंत राज्य से होता है

आर. जे. गैटल :- राजनीति विज्ञान के अंतर्गत राज्य के अतीत वर्तमान और भविष्य तथा राजनीतिक संगठन और राजनीति के मूल तत्व का अध्ययन किया जाता है।

Scanned by TapScanner

राजनीति सिद्धांत का विचार क्षेत्र:- राजनीति सिद्धांत के अंतिगत भिन्न-२ पक्षो का अध्ययन किया जाता है। राजनीति का सम्बध मनुष्यो के सार्वजनिक जीवन से है
राजनीति सिद्धांत के स्वरूप को समझने के लिए इन दोनो स्वरूपो की जानकारी जरूरी है। राजनीति राजनीति दर्शन का मुख्य सरोकार इस समस्या से है कि उत्तम जीवन की प्राप्ति के लिए किस तरह राजनीतिक संगठन उपयुक्त होगा परंतु यह वैज्ञानिक अन्वेषण का विषय नही है। यह केवल नैतिक चिंतन का विषय है। राजनीति विज्ञान केवल अनुभव-मूलक ज्ञान को मान्यता देता है।

अरस्तु को राजनीतिक विज्ञान का जनक कहा जाता है। यद्यपि इसे राजनीति विज्ञान के नाम से सम्बोधित करने का श्रेय गॉडविन और मेरी वॉलस्टोन क्राफ्ट को है। राजनीति विज्ञान पर गुणवत्ता पूर्ण लेखो के लिए "School of political science columbia" ने दिया "The political Science quarterly generate-1885" आरम्भ किया था।

उदारवादी दृष्टिकोण:-

(i) यह राजनीतिक परस्पर विरोधी हितो मे समंजस्य का साधन मानता है
(२) राजनीति समुहो की गतिविधियाँ है।
(३) राजनीति सामान्य हितो को बढ़ावा देने का साधन है।
(४) राजनीति मे आधिकारिक सत्ता का प्रयोग होता है

मार्क्सवादी दृष्टिकोण:-

(1) यह राजनीति को वर्ग-संघर्ष का क्षेत्र मानता है।

Scanned by TapScanner

(2) परस्पर विरोधी वर्गों के हितो मे सामंजस्य सम्भव नहीं है
(3) राजनीति वर्ग प्रभुत्व का साधन है।

समुदायवादी दृष्टिकोण :-

(1) मानव प्रकृति की मूल विशेषता परस्पर सहयोग की भावना है। संघर्ष की नही। यही भावना राजनीति संगठन की बुनियाद है
(2) राजनीति परस्पर सहयोग का क्षेत्र है। संघर्ष का नही।
(3) यह व्यक्ति को समुदाय का अभिन्न-अंग मानते हुए राजनीति को सामान्य हित की सिद्धी का साधन मानता है.

सेबाइन के अनुसार राजनीति सिद्धांत के तीन तत्व होते है

1. तथ्यो पर आधारित
2. क्या होना चाहिए
3. कैसा होना चाहिए

राजनीति विज्ञान का स्वरूप :-

राजनीति विज्ञान के समर्थक राजनीति के अध्ययन को एक विषय के रूप मे विकसित करना चाहते है ताकि इसकी विवेचना धार्मिक मान्यताओं अलौकिक तत्वो या पौराणिक एवं छद्म व्याख्यो के विवरण पर आधारित न रह जाए। यह राजनीति का अध्ययन प्रकृतिक विज्ञानो जैसे भौतिकी जीव-विज्ञान की तरह तथ्यो का पता लगाने और उसमे परस्पर सहसंबंध स्थापित करने के उद्देश्य से करना चाहिए।

वैज्ञानिक पद्धति क्या है?

संक्षेप मे वैज्ञानिक पद्धति के अंतर्गत निम्न प्रकार की प्रक्रिया करते है.

Scanned by TapScanner

CLASSTIME Page No.
Date / /

1. निरक्षण :- Observation

इसका अर्थ है यह कि हमें वस्तु स्थिति की जाँच अपने Sense organs ज्ञानेंद्रियों (आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा) से करनी चाहिए।

2. समानीकरण :- Generation

इसका अर्थ है कि हमे अपने निरिक्षण के आधार पर भिन्न तथ्यो से परस्पर सम्बन्ध या सहसंबंध का पता लगना चाहिए।
(1) आगमन पद्धति — विशेष से सामान्य की ओर
(2) निगमन पद्धति — सामान्य से विशेष की ओर

3. व्याख्या :- Explanation

इसका अर्थ यह है कि प्रस्तुत घटना स्थिति या प्रवृति की कारणों पर प्रकाश डालना

4. भविष्यवाणी और निर्देश

इसका अर्थ यह है की हम भविष्य मे इन तथ्यो की भविष्यवाणी भी कर सकते है।

राजनीति दर्शन का स्वरूप :-

राजनीति विज्ञान का सरोकार यथार्थ या तथ्यो से है। जबकि राजनीति दर्शन का सरोकार तथ्यो के साथ-2 (आदर्शो Ideals) (मानको Norms (मूल्यों values यानि राजनीति विज्ञान यह पता लगता है। की मनुष्य राजनीतिक स्थिति मे क्या-2 करते है। वहीं राजनीति दर्शन मे क्या-2 होना चाहिए यह निर्धारित करता है कि ऐसी स्थिति मे मनुष्य क्या-2 करते है। और उन्हें क्या-2 करना चाहिए

Scanned by TapScanner

CLASSTIME Page No.
Date / /

राजनीति दर्शन की विशेषताएँ :-

1. विश्लेषण :- Analyse

किसी संकल्पना के विश्लेषण का अर्थ यह है कि उसकी परिभाषा उसके मूल तत्व

2. संश्लेषण :- Synthesis

इसका अर्थ यह है कि परस्पर जुड़ी हुई संकल्पनाएँ का निरूपण करते समय उनके तार्किक सम्बंध का स्पष्ट कर देना चाहिए।

3. परिष्कृति :- Improvement :-

इसका अर्थ है कि जब कोई शब्द अनेक संदर्भ मे प्रयोग हो तो तब हम उसकी ऐसी परिभाषा या उपयोग की संस्तुति करते है.

राजनीति सिद्धांत का ह्रास से सम्बंधित विवाद 1953 में अमेरिकी राजनीति वैज्ञानिक डेविड ईस्टन ने अपनी बहुचर्चित कृति "दा पोलिटिकल सिस्टम The political system" और "इन्क्वारी इनटू दा स्टेट ऑफ पोलिटिकल साइंस Enquiry into the state of political science" के अंतर्गत यह दावा किया की परम्परागत राजनीति सिद्धांत "कोरे चिंतन मनन" पर आधारित है उसमे राजनीति यथार्थ के गहन निरक्षण का नितांत अभाव है, अतः राजनीति सिद्धांत को वैज्ञानिक आधार पर स्थापित करने के लिए इसे चीर-सम्मत ग्रंथों और राजनीति विचारों के इतिहास की परम्परा से मुक्त करना जरूरी है. ईस्टन ने यह भी लिखा है कि मार्क्स और जे० एस० मिल के बाद कोई महान दार्शनिक पैदा

Scanned by TapScanner

नहीं हुआ अतः पराश्रित की तरह एक शताब्दी पुराने विचारों से चिपके रहने से क्या फायदा है।

ईस्टन ने राजनीतिक वैज्ञानिकों को यह सलाह दी की उन्हें अन्य सामाजिक विज्ञानिक के साथ मिल कर एक व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान का निर्माण करना चाहिए उनके अनुसार आधुनिक राजनीति की विज्ञान मे मूल्यो के विश्लेषण की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि मूल्य तो व्यक्तिगत या समूहगत आदि मान्यताओ का संकेत देते है।

आल्फ्रेड कॉबन: 1953 मे political science quarterly मे अपने लेख के अंतर्गत यह तर्क दिया की समकालीन समाज मे ना तो पुंजीवादी प्रणाली मे राजनीति सिद्धांत की कोई प्रासंगिकता रह गयी है ना तो साम्यवाद प्रणाली मे। कॉबन ने तर्क दिया कि हिगल और मार्क्स की दिलचस्पी तो सृष्टि के छोटे से हिस्से मे थी।

सीमोर मार्टिन:- पॉलिटिकल मैन इसके अंतर्गत तर्क दिया कि समकालीन समाज के लिए उपयुक्त मूल्य पहले से ही तय किया जा चुका है। यह कहते है कि वर्तमान लोकतंत्र का सक्रिय रूप ही उस उत्तम समाज की निश्चयात्मक अभिव्यक्ति है।

जर्मीनो:- ने तर्क दिया के राजनीति सिद्धांत की नई भूमिका को समझने के लिए उसे राजनीति दर्शन के रूप मे जाना पहचाना जाना चाहिए। राज० ह्रास के दो कारण थे ① प्रत्यक्ष वाद ② राजनीति विचारधारा का प्रधानताएं

लियोस्ट्रास:- 1962 मे यह तर्क दिया की राजनीति का नया विज्ञान ही उसके ह्रास का यथार्थ लक्षण है। राज० का अनुभव मूलक समस्त मूल्यो की समानता की शिक्षा देता है।

हर्बट मारक्यूज:- ने राजनीति और समाज के अध्ययन मे राजनीतिक वैज्ञानिकता की मांग के एक और जोखिम की ओर संकेत किया इनकी कृति का नाम "One Dimensional man" है।